(1) Q. गुप्तकाल को स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है? स्पष्ट करें

Ans → गुप्तकाल भारतीय इतिहास में एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। क्योंकि यह काल अत्यन्त ही सुख शान्ति और समृद्धि का था। इसी के आधार पर इतिहासकारों ने इस युग को स्वर्ण-युग (Golden Age) कहा है। स्वर्ण युग उसको कहा जाता है, जो सोने की तरह मूल्यवान, कीर्तिवान, शक्तिवान, धनवान, गुणवान और आकर्षक होता है। गुप्तकालीन स्वर्णयुग की तुलना पेरिक्लियन, आगस्टन और एलिजाबेथन कालों से की जाती है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि गुप्तों का शासनकाल भारतीय इतिहास में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि इसी काल में भारत की सर्वांगीन उन्नति हुई थी। भारत की राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक और कला तथा विज्ञान की उन्नति उच्चतम शिखर पर पहुँच गई थी और इसी वजह से यह गुप्त युग स्वर्णयुग के नाम से भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध है। यह वही युग था, जिसमें भारतीयों को पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त थी और भारत की सभ्यता तथा संस्कृति के गौरव का प्रचार बहुत बड़े पैमाने पर विदेशों में हुआ था। अतः निःसंदेह यह युग भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग है। जैसा कि डा० स्मिथ ने एक स्थान पर लिखा है कि- "हिन्दू भारत के इतिहास में महान गुप्तसम्राटों का काल किसी भी अन्य काल से अधिक सन्तोषजनक और सौम्य चित्र उपस्थित करता है। कला का विज्ञान और साहित्य के क्षेत्र में कहीं अधिक उन्नति हुई और बिना किसी अत्याचार के धर्म के क्रमागत सम्पादन किए गये हैं।" इस स्वर्ण युग के निम्नलिखित प्रमुख तत्वों का वर्णन किया जाता है :-

(i) महान सम्राटों का काल : गुप्तकाल के प्रायः सभी सम्राट महान थे। समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय और स्कन्दगुप्त आदि सम्राटों की गिनती उच्चकोटि

के शासकों में की जाती है। वे उद्भट विद्वान, साहसी तथा वीर योद्धा थे। उन्होंने अपनी बुद्धि से विशाल साम्राज्य की स्थापना की। उन्होंने सम्पूर्ण भारत में अपनी विजय पताका को लहराया था।

(2) राजनीतिक एकता का काल :- गुप्तकाल राजनीतिक एकता के दृष्टिकोण से भी स्वर्णयुग ~~देश की एकता~~ था। महान सम्राट अशोक की मृत्यु के बाद भारत की एकता तिरोहित हो गई थी। फलत: देश की एकता कई खण्डों में बँट गई थी लेकिन गुप्त सम्राटों ने अपनी दिग्विजय की नीति के द्वारा भारत की एकता पुन: स्थापित किया जिससे देश के गौरव में चार-चाँद लग गये थे। अत: गुप्तवंश के सम्राटों ने अपनी योग्यता का परिचय देते हुए सारे भारत को एक राजनीतिक धागे में पिरो दिया।

(3) सुव्यवस्था तथा शान्ति का काल :- गुप्तकाल भारतीय इतिहास में सुव्यवस्था तथा शान्ति का काल है। इस काल में प्रजा की उन्नति चरम सीमा पर पहुँच गई थी। गुप्तवंश के सम्राटों ने एक ऐसे विशाल साम्राज्य की स्थापना की जो कई शताब्दियों तक चलता रहा। कहीं से उसमें कोई कमी नहीं दिखाई पड़ी। यद्यपि इस काल का दण्ड विधान कठोर नहीं था, फिर भी सर्वत्र शान्ति और सुव्यवस्था विराजमान थी। न्याय की उचित व्यवस्था इस वंश की जान थी। इस युग में गमनागमनों के साधनों का अभाव नहीं था। फलत: व्यापार तथा व्यवसाय उन्नत अवस्था में थे। दीन-दु:खियों की राज्य की ओर से पर्याप्त सहायता दी जाती है। थी।

④ धार्मिक सहिष्णुता का काल :- गुप्तकाल का धार्मिक दृष्टिकोण भी प्रशंसनीय था। इस युग में हिन्दू धर्म का पर्याप्त उत्थान हुआ था लेकिन गुप्तकाल की सबसे बड़ी विशेषता थी धार्मिक सहिष्णुता। सम्राट की निगाहों में सभी धर्मों का अपना - अलग स्थान और महत्व था। गुप्त सम्राटों की सहिष्णुता की नीति से केवल भारतीयों को ही लाभ नहीं होता था बल्कि शक, यूनानी, सिथियन और कुषाण आदि को भी हिन्दू समाज में प्रमुख स्थान दिया जाता था। अतः इस नीति से विदेशियों को भी काफी लाभ था। इस तरह से गुप्तकाल निश्चय ही स्वर्ण-युग था।

⑤ वैदिक सभ्यता तथा संस्कृति की रक्षा का काल : गुप्त वंश के प्रायः सभी सम्राट वैदिक सभ्यता तथा संस्कृति के बड़े पोषक थे। उन लोगों ने वैदिक सभ्यता को अपनाकर फिर से उसमें नई जान ला दी। अश्वमेध - यज्ञ करा गुप्त सम्राटों ने वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित किया। अतः वैदिक सभ्यता तथा संस्कृति को गुप्त सम्राटों की संरक्षता प्राप्त हो जाने से उसको खूब फूलने - फूलने का अवसर प्राप्त हो गया। इस दृष्टिकोण से भी गुप्त-काल स्वर्णयुग माना जाता है।

⑥ साहित्य की उन्नति का कला :- साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य की उन्नति शान्ति काल में ही होती है और गुप्त काल में पूर्ण शान्ति थी। फलतः इस युग की पूरी उन्नति हुई। गुप्त सम्राट भी साहित्य के प्रेमी थे। प्रसिद्ध साहित्यकारों, कवियों,

लेखकों और दार्शनिकों से उनका दरबार हरदम खचाखच भरा रहता था। श्री कालीदास, बसुवन्धु, वराहमिहिर, हरिषेण और विशाखदत्त आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ईश्वर कृष्ण ने सांख्यकारिका की रचना और सांख्यदर्शन की समीक्षा इसी काल में की थी। विश्व के सर्वोत्कृष्ट कवियों की पंक्ति में उनका स्थान था। आज उनकी सात कृतियाँ, चार काव्यात्मक और तीन नाटक मौजूद हैं।

(7) वैज्ञानिक उन्नति का काल :- इस युग में भी विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्ण उन्नति हुई थी, गणित, रसायन विज्ञान, पदार्थ विज्ञान, धातु विज्ञान और ज्योतिष थे। उनका ग्रहण के संबंध में विचार वास्तव में वैज्ञानिक है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घुमती है। चरक और सुश्रुत इस युग के प्रसिद्ध वैद्य थे। बराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त इस काल के ज्योतिषज्ञ थे। ब्रह्मा सिद्धान्त ब्रह्मगुप्त की ही रचना थी।

(8) कला की उन्नति का काल :- गुप्तकाल में भारतीय कला की खूब उन्नति हुई थी। वस्तु-कला, मूर्ति-निर्माण कला, शिल्प-कला और संगीत-कला प्राय: सभी दृष्टिकोण से कला में काफी उन्नति हुई थी। अजन्ता की गुफाओं की चित्तकारी आज भी यह कह रही है कि गुप्तकाल स्वर्णयुग का था। मंदिर, बिहार चैत्य, स्तूप और बौद्ध तथा हिन्दू मूर्तियाँ आदि

उस काल की अमर कलात्मक प्रणाम है। उस काल की कला बहुत तरह की विशेषताओं से ओत - प्रोत है है। बिहार शरीफ और नालन्दा में पुराने बिहारों के जो बहुत से प्राचीन खण्डहर उपलब्ध है, वे गुप्त काल के ही है। अतः गुप्तकाल कला के पुनर्जीवन का ही नही बल्कि चरमोत्कर्ष तथा प्रस्फुटन का काल था।

⑨ विदेशों में भारतीय सभ्यता के प्रचार का काल :-
गुप्तकाल में भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विदेशों में खूब प्रचार हुआ।

उपसंहार :- उपर के तथ्यों के आधार पर यह सिद्ध ही जाता है कि भारतीय इतिहास में गुप्तकाल में प्रजा का जीवन सुखदायक था। चोरी - डकैती का डर नहीं था। अरविन्द के शब्दों में - "भारत ने अपने इतिहास में कभी भी अपनी जीवनी शक्ति को अनेक दिशाओं में प्रस्फुटित होते नहीं देखा था"। दूसरे प्रसिद्ध इतिहासकार वारनेट के शब्दों में - "गुप्तकाल साहित्य भारत के इतिहास में वही स्थान रखता है कि जो यूनान के इतिहास में पेरीक्लीज के युग को प्राप्त है।" तीसरे इतिहासकार ए० सी० बनर्जी का कथन कि - "गुप्तकाल कला तथा साहित्य में बड़ी क्रियाशीलता का समय था और उस काल साम्राज्य समृद्ध तथा सुशासित था"। अतः निर्विवाद है कि गुप्तकाल स्वर्ण युग था ॥

Dr. Digambar Jha
Dept of History